ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–०६
दिनांक- शुक्रवार, २१ जनवरी, २०२२

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 17.3 एवं 8.6 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 94 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 73 प्रतिशत, हवा की औसत गति 3.6 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 1.0 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 0.8 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 12.1 एवं दोपहर में 20.7 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(22–26 जनवरी, 2022)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 22–26 जनवरी, 2022 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में गरज वाले बादलों के बनने की संभावना है तथा इसके प्रभाव से अगले दो तीन दिनों (२२–२४ जनवरी) तक मौसम के बदलाव के साथ हल्की वर्षा अनेक स्थानों पर होने की संभावना है। जबकि बेगुसराई, समस्तीपुर, दरभंगा, मधुबनी, पूर्वी तथा पश्चिमी चम्पारण के जिलों में २४ जनवरी को हल्की से मध्यम वर्षा होने की सम्भावना है। वर्षा के समय हवा की गति अधिक रह सकती है।
- अधिकतम तापमान 18 से 20 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 8 से 11 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 7 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से पुरवा हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 75 से 80 प्रतिशत तथा दोपहर में 45 से 55 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- कृषक भाईयों को सलाह दी जाती है कि पूर्वानुमान की अवधि में हल्की वर्षा की संभावना को देखते हुए कृषि कार्यों में सर्तकता बरतें। फसलों में कीटनाशक दवाओं का छिड़काव आसमान साफ रहने पर हीं करें। खड़ी फसलों जैसे–गेहूँ, मक्का, आलू, मटर, चना एवं सब्जिओं की फसल में इस समय सिंचाई न करें, इसके लिए इंतजार कर सकतें हैं। हल्दी एवं ओल की तैयार फसलों की फिलहाल खुदाई न करें। खुदाई की गई हल्दी एवं ओल की कंद को सुरक्षित स्थानों पर भंडारित कर लें।
- समय से बोयी गई गेहूँ की ४० से ५० दिनों की फसल में दूसरी सिंचाई एवं अगात बोई गई गेहूँ की फसल जो ६० से ६५ दिनों की हो गई है, उसमें तीसरी सिंचाई के लिए इंतजार कर सकतें हैं।
- बसन्तकालीन ईख की रोपाई के लिए मौसम अनुकूल हो रहा है। रोपाई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की तैयारी के वक्त जुताई में १५–२० टन सड़ी हुई गोबर की खाद का व्यवहार करें। यह खाद भुमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाती है।
- गरमा मौसम की सब्जियों जैसे–भिन्डी, कद्दू, कदिमा, करेला, खीरा एवं नेनुआँ की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। सब्जियों की स्वस्थ एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए सड़ी–गली गोबर खाद का प्रबंध करें। १५०–२०० क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पुरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर मिला दें। यह खाद भुमि की जलधारण क्षमता एवं पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाती है। कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई में क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २ लीटर प्रति एकड़ की दर से २०–३० किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें। इस कीट के पिल्लू रात्री के समय निकलकर इन सब्जियों की छोटे–छोटे उग रहे पौधो पर चढ़कर पत्तियों तथा कोमल शाखाओं को काटकर खाती है एवं जमीन पर गिरा देती हैं जिससे पूरा पौधा ही सूख जाता है।
- विलम्ब से बोई गयी दलहनी फसल में २ प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव एक सप्ताह के अन्तराल पर दो बार करें। अरहर में फली छेदक कीट की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
- इस समय आम एवं लीची में मंजर आने की संभावना अधिक रहती है। अतः किसान भाई अपने आम एवं लीची के बागानों में किसी भी प्रकार का कर्षण क्रिया नहीं करें। इन बगानों में जहाँ दीमक की समस्या हो, क्लोरपाईरिफॉस २० ई०सी० / २.५ मी०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर मुख्य तने एवं उसके आस–पास की मिट्टी में छिड़काव करने से दीमक की उग्ररता में कमी आती है। मधुआ एवं दहिया कीटों का प्रकोप कम करने के लिए वृक्षों में इमिडाक्लोप्रीड १७.८ एस०एल० अथवा साइपरमेथ्रीन १० ई०सी०/१.० मी०ली०/ली० पानी की दर से घोल बनाकर समान रुप से छिड़काव करें। घुलनशील गंधक (सल्फर) ८० डब्लू०पी०/ २ ग्रामध्लीटर पानी की दर से घोल कर पत्तियों पर समान रुप छिड़काव करने से आने वाले समय में पौउड्री मिल्डेव की उग्रता में कमी आती है।
- पिछात बोयी गई गेहूँ की फसल में खर–पतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें। फसल में जिंक की कमी के लक्षण (गेहूँ के पौधों का रंग हल्का पीला हो जाना) दिखाई दें रहें हो तो २.५ किलोग्राम जिंक सल्फेट, १.२५ किलोग्राम बुझा हुआ चुना एवं १२.५ किलोग्राम युरिया को ५०० लिटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से १५ दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- आलू की अगात प्रभेद की तैयार फसलों की खुदाई कर लें। बीज वाली फसल की ऊपरी लत्ती की कटाई कर लें तथा खुदाई के १५ दिनों पूर्व सिंचाई बन्द कर दें। पिछात आलू की फसल में कटवर्म या कजरा पिल्लू की निगरानी करें। आलू की फसल में शुरुआती अवस्था से कंद बनने की अवस्था तक यह कीट फसल को नुकसान पहुँचाती है। उपचार हेतु क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २.५ से ३ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से से घोल बनाकर छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।

आज का अधिकतम तापमानः १९.७ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से २.३ डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः ७.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.३ डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी